

प्रवासियों के अनियतित आगमन पर लगे रोक

हिमाचल की आबोहवा एवं प्रवासिक नजरों से हेतु एवं स्वास्थ्य को सुरक्षा प्रदान करते हैं और बड़ी संख्या में देशी-वेशेशी सैलानी यहां आकर आनंदित होते हैं। लेकिन देवी-देवताओं की निवास स्थली देवधूमि हिमाचल इधर बीते 40 सालों से भारत के अन्य राज्यों से आकर काम-धर्मों के लिए प्रवास कर रहे प्रवासियों, मुस्लिम समुदाय की बढ़ती आबादी, रेहड़ी-फड़ी वालों, फेरी वालों, नक्कीर वालों, सोना चमकने वालों, पॉक और ऑफ अर्टीनों से जर्मने लेकर स्थानी निवासी के रूप में रहे प्रवासियों के कारण स्थानीय हिमाचलीनों के लिए संकट बन बनता रहा है और इस वजह से न केवल यहां की डेंगोफाइली अस्थानीय वालों के समक्ष उभरकर सामने आना शुरू हो चुकी है और जिसके कारण आने वाले समय में संघर्ष की परिस्थितियों निर्विट होना चाही है। दूसरे, हिमाचल की खोलोलिक परिस्थितियों अब ज्यादा आबादी का जांच उठाने और बड़ी प्रवासियों की भीड़ को समायोजित करने में भी असमर्थ है।

हाल ही में पालमुकुर के भवाराना में रहे रहे बाही राज्य के मुस्लिम समुदाय के एक व्यक्ति के नाम पर एक जीवनी की रिजिस्ट्री होने का मामला सामने आया है। भवाराया जा रहा है कि यह रिजिस्ट्री फर्जी कृषि प्रमाणपत्र के अधार पर हुई है। मामला सामने आता ही एस्ट्राईएप भालमुकुर ने इस मामले की जांच करने की बात कही है। इसी तरह दूसरा मामला हिमाचल प्रदेश में शिमला के संजली और मंडी शहर में अवैध मस्जिद निर्माण को लेकर गरमाया हुआ है, जिसको लेकर कुछ हिंदू संगठनों ने 11 और 13 संतर्वर का शिमला और मंडी शहरों में बड़ा प्रदर्शन किया। हिमाचल प्रदेश में अब मुस्लिम कट्टापेंथी बढ़ते जा रहे हैं, रोहियाओं का मामला अलग है। एक सूचना के अनुसार हिमाचल में मस्जिदों की संख्या 500 से ज्यादा हो चुकी है, जबकि राज्य सरकार के पास इनका सरकारी अंकड़ा 393 का है। आज की बातों में हिमाचल प्रदेश में बड़ी राज्यों के प्रवासियों की संख्या लाखों में पहुंच चुकी है। हिमाचल का कोई भी गाव/कस्बा ऐसा नहीं बचा है जहां स्थानीय लोगों से आए लोगों की न हो। गृह निर्माण के अतिरिक्त इहाने अब दूसरे काम-धर्मों में भी हाथ आजमाना शुरू कर दिए हैं जिससे स्थानीय युवाओं के समक्ष स्वरोजगार का संकट गहराने लगा है और कई जानों से इन प्रवासियों की स्थानीय लोगों के साथ झड़पों एवं मारपीट की खबरें भी सोशल मीडिया में फैलने-देखने को मिलती रहती हैं। इन हालत में सबसे चिंतनजनक बात यह है कि प्रदेश के पुनर्जीवनों में इन प्रवासियों का सही तरीके से पंजीकरण नहीं किया जा रहा है।

हृदयनारायण दीक्षित

श्रद्धा भाव है और श्रद्धा कर्मकाण्ड है। प्रसाद आतंरिक आनंद देता है। परंतु जीवे श्रद्धा को चित्त की स्थिरता या अशोष से जोड़ता है। श्रद्धा की दशा में श्वेत नहीं होता। श्रद्धा की अधिवक्ति श्रद्धा है। भारतीय विद्वानों ने श्रद्धा भाव को श्रद्धा कर्म बनाया। पिता, पितामह और प्रपितामह के लिए अन्न, भोजन, जल आदि के अपांग तर्पण का कर्मकाण्ड बनाया। श्रद्धा है कि अपितृ किया गया भोजन की पितरों को मिलता है। वे प्रसन्न हैं कि श्रद्धा का भोजन पुरोहित या अपितृ को अपितृ होता है, क्या वह मृत पूर्वजों द्वारा खाया जाता है? जो मृत्यु के बाद अब शरीर धारण कर चुने होते हैं? इस प्रश्न का उत्तर भी दिया गया है, पिता, पितामह और प्रपितामह को वैदिक मंत्रों में ऋषिशः वरुषा धारण की बात आई। आर्य समाज के अपितृ को वैदिक मंत्रों में ऋषिशः वरुषा धारण की बात आई। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

संगति में नहीं आते। वे अंधविश्वास जान पड़ते हैं तो लेकिन कर्मकाण्ड मिलान नहीं होता। सभ्य समाज में पितरों का आदर होना ही चाहिए। श्रद्धाकर्म की वैज्ञानिका की बहस पुरानी है। मत्स्य पुराण (19.2) में प्रश्न है कि श्रद्धा का भोजन पुरोहित या अपितृ को अपितृ होता है, क्या वह मृत पूर्वजों द्वारा खाया जाता है? जो मृत्यु के बाद अब शरीर धारण कर चुने होते हैं? इस प्रश्न का उत्तर भी दिया गया है, पिता, पितामह और प्रपितामह को वैदिक मंत्रों में ऋषिशः वरुषा धारण की बात आई। आर्य समाज के अपितृ को वैदिक मंत्रों में ऋषिशः वरुषा धारण की बात आई। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।



श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। पहले बात साफ़ थी कि मृतामां श्राद्धकर्म का भोजन पाती है। पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। पहले बात साफ़ थी कि मृतामां श्राद्धकर्म का भोजन पाती है। पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। पहले बात साफ़ थी कि मृतामां श्राद्धकर्म का भोजन पाती है। पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। पहले बात साफ़ थी कि मृतामां श्राद्धकर्म का भोजन पाती है। पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। पहले बात साफ़ थी कि मृतामां श्राद्धकर्म का भोजन पाती है। पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। पहले बात साफ़ थी कि मृतामां श्राद्धकर्म का भोजन पाती है। पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। पहले बात साफ़ थी कि मृतामां श्राद्धकर्म का भोजन पाती है। पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। पहले बात साफ़ थी कि मृतामां श्राद्धकर्म का भोजन पाती है। पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। पहले बात साफ़ थी कि मृतामां श्राद्धकर्म का भोजन पाती है। पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज के वर्षा, रुद्र और आदित्य देव के समान वर्णा या हाथ में है।

श्रद्धा कर्म परमपा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की वर्चा है लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का गेल नहीं है। प

नाविक व बड़े वाहन
संचालक कर रहे लोगों से
अवैध वसूली
शमशाबाद, समृद्धि न्यूज़



गांव में भरा बाढ़ का पानी

समृद्धि न्यूज़

गंगा नदी में पिछले कई दिनों से लगातार पानी छोड़ जाने का दौर जारी है। पानी छोड़ जाने के बाद कटरी क्षेत्र में भयावह हालत हो गए हैं। वर्ती ग्रामीणों के आगे रोजी रोटी की समस्या भी चिकित्सा हो गई। कहीं-कहीं लोग जलमन इलाकों में जैसे तेरे गुजारा कर रहे हैं, कोई छत को सहारे हुए हो तो कोई चारपाई को, किसी को चारपाई के सहारे घर घुस्ती का कार्य करते हुए देखा जा रहा है। वर्तमान में बड़े पोड़ित इलाकों एं अंजीबाला, लुखड़ुरा, कैचिया, अचानकपुर, खिंडौर, रूपपुर, मांगलीपुर, समुपा, गढ़िया हेवतपुर, कटरी तोकिक, भगवानपुर,

बीमारियां फैल रही हैं। ग्रामीणों के अनुसार सर्दी, जुकाम, बुखार, खांसी, उल्टी, दस्त आदि बीमारियां फैल रही हैं। जिससे झोलाडाप बाढ़ पीड़ितों से अच्छी खांसी कमाई कर रहे हैं। बाई वाह शमशाबाद-शहजाहापुर मार्ग जिस पर कभी छोड़े बड़े वाहन फर्टारा भर कार्य रहे थे वह भी हैरान हो लंबे समय से जारी बाढ़ के सैलाब से सड़कों पर बड़े गंडे हो गए हैं। जो जानलेवा साकृत हो सकते हैं। पुलिस द्वारा शमशाबाद शहजाहापुर मार्ग पर ग्राम चौहाहर हर के निकट जल सैलाब के कारण मार्ग बंद कर दिया गया। सुरक्षा की दृष्टि से दोनों तफुलिस फोर्स को लगा दिया गया। कुछ लोग बड़े वाहनों का प्रयोग कर पेल व सइकिल सवार लोगों से अवैध वसूली कर रहे हैं। लोगों की मजबूरी का फायदा आजकल हरके होते हुए कहा जाता है कि सफ-सफाई ही व्यक्ति को स्वस्थ रखती है। उन्होंने प्रशान्तिर्वाची अवित्त रिहाई ने विधायकों का माल्यांपण कर स्वागत किया।

स्वच्छता अभियान के तहत विद्यालय में विधायक ने लगायी झाड़ू



विद्यालय में स्वच्छता अभियान चलाते विधायक व प्रधानाचार्य

प्रधानाचार्य अनिल सिंह ने छात्रों को गता। इस अवसर पर प्रधान प्रदीप गुरु, किस प्रकार हाथों को स्वच्छ रखो। प्रवीप सिंह, सुशील पाल, उन्होंने स्वयं अपने हाथों को धोकर वीरेन्द्र कुमार, सुनील कुमार, भूपेन्द्र शाह, रामनंद, देवेन्द्र कुमार, निराशीकां विद्यालय में आम, अमरल, चौहान, वेल, अमितेंद्र, कौशल कुमार, नवल शजन, नीबू आदि के बृक्षों को लगाया। विशेष आदि लोग मौजूद रहे।

किसान नेताओं ने बांध बनवाने की डीएम से की मांग

फरुखाबाद, समृद्धि न्यूज़



एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

समृद्धि न्यूज़

किसान लोक शक्ति संगठन ने जिला मुख्यालय पहुंचकर समस्याओं संबंधित मुख्यमंत्री सम्बोधित जापन एसडीएम को सौंपा। मंडी सिमिति कायमगंज को खाली कराने व तराई क्षेत्र के गंगा तट बांध बनाने व तेरु जापन में मांग की गई।

गंगा तट बांध क्षेत्र तराई के 156 गंगा जो दिन भयानक बाढ़ से ज़्यादा रहे हैं। कई दिन गंगा को मुख्यालय से संपर्क रुट चुका है। ऐसे में गंगा ग्रामीणों को न तो मैट्रिकल सुविधा और न ही खाने पीने की सुविधा अथवा बाढ़ में फंसे लोगों को निकालने के लिए स्टीमर सुविधाओं की कामयात्रा का मुख्यालय से संपर्क रुट चुका है। ऐसे में गंगा ग्रामीणों को निकालने के लिए गंगा तट बांध बनाने का मुख्यालय से जिला मुख्यमंत्री द्वारा जापन दिया गया। अभी तक गंगा ग्रामीणों को निकालने के लिए गंगा तट बांध बनाने का मुख्यालय से जिला मुख्यमंत्री द्वारा जापन दिया गया। अभी तक गंगा ग्रामीणों को निकालने के लिए गंगा तट बांध बनाने का मुख्यालय से जिला मुख्यमंत्री द्वारा जापन दिया गया।

हर साल से बाढ़ की मासमारी में ग्रामीणों की करोड़ों रुपये की फसलों का नुकसान व हजारों की संख्या में जाने जा गया चुके हैं। इन्होंने जैसी बढ़नाएं हो रही हैं। ऐसी स्थिति को देखते हुए किसानों ने किसान नेता व गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से गंगा अचानकपुर से वीर सहाय की मद्देज़ा लगभग 5 किलोमीटर तक तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने गंगा तट बांध बनाने की मांग की है।

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता



एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

समृद्धि न्यूज़

हर साल से बाढ़ की मासमारी में ग्रामीणों की करोड़ों रुपये की फसलों का नुकसान व हजारों की संख्या में जाने जा गया चुके हैं। इन्होंने जैसी बढ़नाएं हो रही हैं। ऐसी स्थिति को देखते हुए किसानों ने किसान नेता व गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से गंगा अचानकपुर से वीर सहाय की मद्देज़ा लगभग 5 किलोमीटर तक तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने गंगा तट बांध बनाने की मांग की है।

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता



एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

समृद्धि न्यूज़

आयोजन किया गया। परीक्षा में अनुसरित बच्चों के अभियानों से संपर्क कर रत्न बांध बनाने के लिए अध्यक्षकों ने कौशल की विद्यालय के गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है।

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

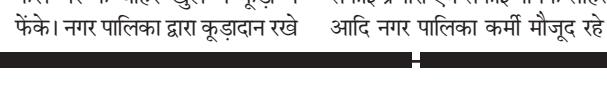


एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

समृद्धि न्यूज़

आयोजन किया गया। परीक्षा में अनुसरित बच्चों के अभियानों से संपर्क कर रत्न बांध बनाने के लिए अध्यक्षकों ने कौशल की विद्यालय के गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है।

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता



एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

समृद्धि न्यूज़

आयोजन किया गया। परीक्षा में अनुसरित बच्चों के अभियानों से संपर्क कर रत्न बांध बनाने के लिए अध्यक्षकों ने कौशल की विद्यालय के गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है।

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

समृद्धि न्यूज़

आयोजन किया गया। परीक्षा में अनुसरित बच्चों के अभियानों से संपर्क कर रत्न बांध बनाने के लिए अध्यक्षकों ने कौशल की विद्यालय के गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है।

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

समृद्धि न्यूज़

आयोजन किया गया। परीक्षा में अनुसरित बच्चों के अभियानों से संपर्क कर रत्न बांध बनाने के लिए अध्यक्षकों ने कौशल की विद्यालय के गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है।

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते किसान नेता

समृद्धि न्यूज़

आयोजन किया गया। परीक्षा में अनुसरित बच्चों के अभियानों से संपर्क कर रत्न बांध बनाने के लिए अध्यक्षकों ने कौशल की विद्यालय के गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। अभी तक गंगा तट बांध बनाने की मांग की है। जिससे लोगों को देखते हुए किसानों ने गंगा तट बांध

